नटराज स्तोत्रं

सदञ्चित मुदञ्चित निकुञ्चित पदंझल झलञ्झलित मञ्जु कटकम्
पतञ्जलि दृगञ्जन मनञ्जन मचञ्चल पदं जनन भञ्जन करम् ।
कदम्बरुचि मम्बर वसं परम मम्बुद कदम्बक विडम्बक गलम्
चिदम्बुधि मणिं बुध हृदम्बुज रविं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ १॥

हरं त्रिपुर भञ्जनं अनन्त कृत कङ्कणं अखण्डदय मन्तरहितं
विरिञ्चिसुर संहति पुरन्धर विचिन्तित पदं तरुण चन्द्र मकुटम् ।
परं पद विखण्डित यमं भसित मण्डित तनुं मदन वञ्चन परं
चिरन्तन ममुं प्रणव सञ्चित निधिं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ २॥

अवन्त मखिलं जगदभङ्ग गुणतुङ्ग ममतं धृतविधुं सुरसरित्-
तरङ्ग निकुरम्ब धृति लम्पट जटं शमन दम्भ सुहरं भवहरम् ।
शिवं दश दिगन्तर विजृम्भित करं कर लसन्मृग शिशुं पशुपतिं
हरं शशि धनञ्जय पतङ्ग नयनं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ३॥

अनन्त नवरत्न विलसत्कटक किङ्किणि झलं झलझलं झलरवं
मुकुन्दविधि हस्तगत मद्दल लयध्वनि धिमिद्धिमित नर्तन पदम् ।
शकुन्तरथ बर्हिरथ नन्दिमुख शृङ्गिरिटि भृङ्गिगण सङ्घ निकटम्
सनन्द सनक प्रमुख वन्दित पदं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ४॥

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्य चरणं मुनि हृदन्तर वसन्त ममलम्
कबन्ध वियदिन्द्ववनि गन्धवह वह्निमख बन्धुरवि मञ्जु वपुषम् ।
अनन्त विभवं त्रिजगन्तर मणिं त्रिनयनं त्रिपुर खण्डन परम्

सनन्द मुनि वन्दित पदं सकरुणं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ५॥

अचिन्त्य मलिवृन्द रुचि बन्धुरगलं कुरित कुन्द निकुरम्ब धवलम्
मुकुन्द सुर वृन्द बल हन्तृ कृत वन्दन लसन्त महि कुण्डल धरम् ।
अकम्प मनुकम्पित रतिं सुजन मङ्गल निधिं गजहरं पशुपतिम्
धनञ्जय नुतं प्रणत रञ्जनपरं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ६॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनित दन्तिमुख षण्मुख ममुं
मृडं कनक पिङ्गल जटं सनक पङ्कज रविं सुमनसं हिमरुचिम् ।
असङ्घमनसं जलधि जन्म करलं कवलयन्त मतुलं गुणनिधिम्
सनन्द वरदं शमित मिन्दु वदनं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ७॥

अजं क्षितिरथं भुजग पुङ्गव गुणं कनक शृङ्गि धनुषं कर लसत्
कुरङ्ग पृथु टङ्क परशुं रुचिर कुङ्कुम रुचिं डमरुकं च दधतमं ।
मुकुन्द विशिखं नमदवन्ध्य फलदं निगम वृन्द तुरगं निरुपमं
सचण्डिक ममुं झटिति संहृतपुरं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ८॥

अनङ्ग परिपन्थिन मजं क्षिति धुरन्धरमलं करुणयन्त मखिलं
ज्वलन्त मनलं दधत मन्तक रिपुं सतत मिन्द्रमुख वन्दित पदम् ।
उदञ्च दरविन्द कुल बन्धुशत बिम्बरुचि संहति सुगन्धि वपुषं
पतञ्जलि नुतं प्रणव पञ्जर शुकं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ ९॥

इति स्तवममुं भुजग पुङ्गव कृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः
सदः प्रभुपद द्वितय दर्शनपदं सुललितं चरण शृङ्ग रहितम् ।
सरःप्रभव सम्भव हरित्पति हरि प्रमुख दिव्यनुत शङ्करपदं
स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधिं परम दुःख जनकं दुरितदम् ॥ १०॥

॥ इति श्री पतञ्जलि मुनि प्रणीतं चरण शृङ्ग रहित नटराज स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥